हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* (गाजर घास/काँग्रेस घास) पर जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन की रिपोर्ट

पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस (गाजर घास/काँग्रेस घास) एक बहुत ही आवांछनीय खरपतवार है, जो कि परिस्थितिकी, कृषि एवं हॉर्टिकल्चर फसलों को काफी नुकसान पहुंचाता है । इसके कुप्रभाव से बचने हेतु हर वर्ष अगस्त माह में 16 से 22 के दौरान जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है । हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा इस विषय पर दिनांक 19 अगस्त, 2021 को *पार्थेनियम* जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, संस्थान के सभागार में किया गया । इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं अनुसंधान कर्मचारियों ने भाग लिया । इसके अलावा संस्थान के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों में कार्यरत कर्मचारी, वर्चुअल माध्यम द्वारा कार्यक्रम से जुड़े, कुल मिलाकर लगभग 60 प्रतिभागियों ने प्रत्यक्ष एवं वर्चुअल माध्यम द्वारा इस कार्यक्रम में भाग लिया ।

प्रारंभ में **डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रमुख - विस्तार प्रभाग**, द्वारा संस्थान के निदेशक, समूह समन्वयक अनुसंधान,कार्यालय अध्यक्ष, मुख्य वक्ताओं सभी विभागाध्यक्षों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और अनुसंधान कर्मचारियों का स्वागत किया और *पार्थेनियम* जागरूकता सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डाला । **डॉ. एस.एस. सामंत**, **निदेशक** ने हिमालयन जैव विविधता पर *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* (गाजर घास/काँग्रेस घास) के प्रभाव पर विस्तार से बताया । उन्होंने बताया कि भारत में पार्थेनियम को काफी खराब खरपतवार माना जाता है, जो इंसानों और जानवरों के स्वास्थ्य पर समस्याएं पैदा करने के साथ-साथ फसल उत्पादकता और पौधों की जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है । *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* मूल रूप से वेस्ट इंडीज और उत्तरी और दक्षिण अमेरिका की उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की प्रजाति है । भारत में यह प्रजाति संयुक्त राज्य अमेरिका से 1955 में आयातित गेहूं के साथ आई तथा धीरे धीरे देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गई, उसके बाद से इस खरपतवार प्रजाति ने भारत में लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर पर अतिक्रमण किया है । यह प्रजाति बंजर भूमि, सामुदायिक भूमि, सड़कों और रेलवे ट्रैक के किनारों और जंगल के साथ कृषि भूमि में भी मुख्य खरपतवार बन गया है ।

डॉ. सतीश कुमार भारद्वाज, प्रभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान, **डॉ. यशवन्त सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्व विद्यालय** नौनी सोलन (हि.प्र.) ने "पार्थेनियम घास के प्रबंधन के बारे में वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया । उन्होंने कहा कि गाजर घास फैलने से आर्थिक और पारिस्थितिक नुकसान होते है । एक अनुमान के अनुसार यह खरपतवार कृषि फसलों मे चालीस प्रतिशत तक़ पैदावार कम करता है । उन्होंने बताया कि इसे फूल लगने से पहले ही हाथ से उखाड़कर नियंत्रित किया जा सकता हैं । इसके अलावा इसके नियंत्रण के लिए खरपतवार नाशक रसायनों का प्रयोग भी किया जा सकता है । उन्होने गाजर घास से प्रभावित क्षेत्र में *सेना तोरा* और *टेगेटस इरिकटा* जैसे पौधों के बीजों का छिड़काव करने की सलाह भी दी, क्योंकि ये प्रजातियाँ उस क्षेत्र में भूमि को ढक देती है तथा गाजर घास को बढ़ने और फैलने से रोकती है । **डॉ. रंजीत कुमार, वैज्ञानिक-ई** ने "*पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस*: उत्तर पश्चिमी हिमालय के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव" शीर्षक विषय पर वक्तव्य दिया । उन्होंने गाजर घास संक्रमित जगहों, गाजर घास के

जीवन-चक्र, इसके पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों और इसके नियंत्रण के उपायों के बारे में बताया । उन्होंने आगे कहा कि गाजर घास से विभिन्न बिमारियां जैसे कि चर्म रोग, स्वास रोग इत्यादि फैलते है । गाजर घास का बीज वर्षों तक भी जमीन में जीवित रह सकता है तथा अनुकूल परिस्थितियाँ आने पर पुनः उगना शुरू हो जाता है । डॉ. कुमार ने गाजर घास से कीटनाशक और खाद बनाने की संभावनाओं पर भी चर्चा की । **डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान** ने "उत्पादकता बढ़ाने के लिए खरपतवार प्रबंधन" विषय पर वक्तव्य दिया । उन्होंने गाजर घास के स्वास्थय पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के विषय में बताया कि यह विभिन्न तरह के चर्म रोगों का कारण बनता है । अतः इसे उखाड़ने के दौरान हाथों पर दस्ताने पहन कर खुद को सुरक्षित रखना चाहिए । डॉ॰ शर्मा ने कहा कि गाजर घास कि रोकथाम के लिए इसके पौधों पर फूल आने से पहले ही इसे उखाड़ने का कार्य करना चाहिए ।मुख्यालय शिमला के अलावा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में भी जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया । **डॉ॰ जोगिन्द्र चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी, विस्तार प्रभाग,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यक्रम में शामिल सभी लोगों का धन्यवाद दिया तथा सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधार्थियों का कार्यक्रम में भागीदारी सुनिश्चित करने और कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

हि.व.अ.सं.
HFRI

मीडिया कवरेज़

जानकारी

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान में विभिन्न अनुसंधान केंद्रों में कार्यरत कर्मचारी प्रतिभागी प्रत्यक्ष और वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े

पार्थेनियम खरपतवार पर बांटी जागरूकता

दिव्य हिमाचल ब्यूरो – शिमला

पार्थेनियम (गाजर घास/कांग्रेस घास) एक बहुत ही नुकसानदायक खरपतवार है, जो परिस्थितिकी, कृषि एवं हॉर्टिकल्चर फसलों को बहुत नुकसान पहुंचाता है, इसके कुप्रभाव से बचने हेतु हर वर्ष अगस्त माह में 16 से 22 तारीख तक जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा इस विषय पर पार्थेनियम जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं अनुसंधान कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा संस्थान के विभिन्न अनुसंधान केंद्रों में कार्यरत कर्मचारी वर्चुअल माध्यम द्वारा कार्यक्रम से जुड़े। लगभग 60 प्रतिभागी प्रत्यक्ष एवं वर्चुअल माध्यम द्वारा इस कार्यक्रम से जुड़े। प्रारंभ में डा. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रमुख विस्तार प्रभाग, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यक्रम में निदेशक, समूह समन्वयक अनुसंधान, सभी विभागाध्यक्षों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और अनुसंधान कर्मचारियों का स्वागत किया और पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह के महत्त्व से अवगत कराया। डा. एसएस सामंत, निदेशक हिमालय वन अनुसंधान संस्थान ने जैव विविधता पर अतिक्रमण खरपतवार प्रजातियों के प्रभाव पर विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि भारत में पार्थेनियम को सबसे खराब खरपतवार माना जाता है, जो इनसानों और जानवरों में स्वास्थ्य समस्याएं पैदा करने के साथ-साथ फसल उत्पादकता और पौधों की जैव विविधता पर एलीलोपेथिक इफैक्ट द्वारा भारी नुकसान पहुंचाता है। डा. संतीश कुमार भारद्वाज, प्रभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान, डा. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सोलन ने पार्थेनियम घास के प्रबंधन के बारे में वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह खरपतवार संयोगवश या आकस्मिक फैलता है। डा. संदीप शर्मा ने बताया कि गाजर घास की रोकथाम के लिए इसके पौधों पर फूल आने से पहले ही इसे उखाड़ने का कार्य करना चाहिए। डा. जोगिंद्र चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी, विस्तार प्रभाग, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा कार्यक्रम में शामिल सभी का धन्यवाद दिया।

दिव्य हिमाचल, 21 अगस्त, 2021

फूल आने से पहले जड़ से उखाड़ें कांग्रेस घास

राज्य ब्यूरो, शिमला : पार्थेनियम (कांग्रेस या गाजर घास) की हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व लेह लद्दाख में समस्या बढ़ती जा रही है। अभी तक विज्ञानी भी इसका ठोस उपाय नहीं खोज पाए हैं। कांग्रेस घास फसलों, वनों व जैव विविधता का समूल नाश कर रहा है। हिमालय वन अनुसंधान संस्थान के विज्ञानियों ने किसानों को सलाह दी है कि वे इसे फ्लावरिंग से पहले जड़ समेत उखाड़ कर खाद बनाएं।

संस्थान ने शिमला में एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें तीन राज्यों के नौ अनुसंधान केंद्र के फील्ड स्टाफ को वर्चुअली जोड़ा गया। उन्होंने किसानों के साथ कांग्रेस घास को उखाड़ने के लिए अभियान चलाया।

सुझाव

- हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व लेह लद्दाख में बढ़ रही दिक्कत
- फसलों, वनों व जैव विविधता का नाश कर रहा कांग्रेस घास

कहां से आया कांग्रेस घास

एचएफआरआइ के निदेशक डा. एसएस सामंत ने बताया कि भारत में पार्थेनियम को सबसे खराब खरपतवार माना जाता है। पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस वेस्टइंडीज, उत्तर व दक्षिण अमेरिका की उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की प्रजाति है। भारत में यह प्रजाति संयुक्त राज्य अमेरिका से 1955 में आयातित गेहूं के साथ आई और धीरे-धीरे देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गई। इस प्रजाति ने भारत में करीब 35 मिलियन हेक्टेयर पर अतिक्रमण किया है।

नौणी विवि के विज्ञानियों ने बताए उपाय

डा. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सोलन के पर्यावरण विज्ञान के अध्यक्ष डा. सतीश कुमार भारद्वाज ने कहा कि यह खरपतवार अचानक फैलता है। इसे जड़ से उखाड़ना चाहिए या खरपतवार नाशक का प्रयोग करना चाहिए। इसके अलावा सीना तोरा और टेगेटस इरेक्टा जैसे पौधों के बीज का छिड़काव करना चाहिए। विज्ञानी डा. रजीत कुमार ने कहा कि गाजर घास का बीज कई वर्षों तक खराब नहीं होता है। विज्ञानी डा. संदीप शर्मा ने उत्पादकता बढ़ाने के लिए खरपतवार प्रबंधन विषय पर वक्तव्य दिया। विज्ञानी डा. जगदीश सिंह ने बताया कि केमिकल इसका प्रभावी उपचार नहीं है। अगर है तो महंगा होने के साथ पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाला है।

दैनिक जागरण, 21 अगस्त, 2021